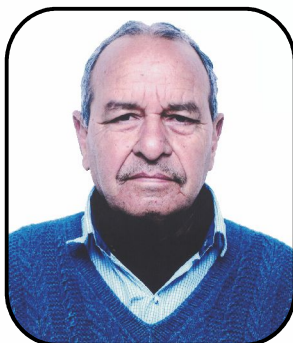


Padma Shri



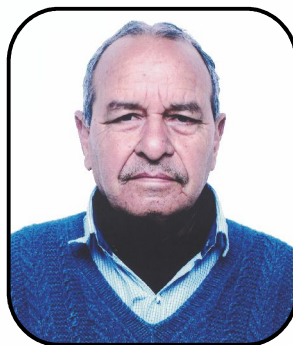
SHRI HARIMAN SHARMA

Shri Hariman Sharma is a well-known progressive farmer, who has developed an innovative variety of Apple (HRMN-99) that can be successfully grown in plains, tropical and subtropical areas where the temperature can be as high as up to 40 to 50 degree Celsius during summers. This variety does not require chilling hours for flowering and fruit setting.

2. Born on 4th April, 1956 in a small village Paniyala in Bilaspur District of Himachal Pradesh, Shri Sharma studied till class ten and left schooling, because of family's economical background. He started practicing farming for wealth generation. But traditional farming has not given enough dividends to him. That is why he has started practicing horticulture. Initially he was growing traditional fruit plants of this area like mango, litchi, guava, etc. But this area received heavy snow frost during winter season due to which mango plants were spoiled and not giving as much fruit. Then he started working on alternative for traditional crops. That alternative came in the form of HRMN-99 (a variety of apple developed by him).

3. Shri Sharma always used to dispose the seeds of eaten apple in his backyard or surroundings of his home. After some years he noticed that the seeds had started germinating. In 2001 he got some fruits on the tree. As a farmer he could sense that this apple tree bearing fruits at a warm area like his village situated at 1800 feet above sea level was extraordinary. He preserved this plant and next year he took some branches and grafted on a plum tree as no apple tree was available. The grafting was successful and started bearing good quality fruits after three years. During 2004 to 2005 he brought crab apple seedlings from Shimla and grafted the same. He created mini orchard of apple trees which continues to bear fruits till date. National Innovation Foundation has extended their support and started transplantation of HRMN 99 saplings from 2014 to 2015 for introduction and evaluation trial in different areas of the country with the objective of adoption and fruiting study in three years plants. Interestingly fruiting has been reported in two or three year plants in almost every state of India. Now this variety is also giving fruits in different parts of world like Nepal, Bangladesh, Germany, Oman, etc. This variety has also conserved under the PPVFRA Act 2001 and designated as a Farmer' Variety.

4. Shri Sharma is the recipient of numerous awards and honours such as 9th Biennial Green Grass Root Innovator award by National Innovation Foundation (An autonomous organization under the Ministry of Science and Technology Govt, of India) in 2017, Jagjivan Ram Krishi Abhinav Puruskar given by Indian council of Agriculture Research in 2020, National Innovator Award by Govt. of India Deptt. of Agriculture in 2016, Best Farmer award by ICAR at Varanasi U.P. in 2018, IARI Fellow award in 2017. Rajasthan Veterinary University Bikaner conferred him with Kheton ke Vagayanik in 2017. Bihar Agriculture University presented him with Best Green Grass Innovator award in 2018. Sher e Kashmir University of Science and Technology Jammu conferred him Innovative Farmer Award in 2021. ZEE Media conferred him with Pride of Punjab, Haryana and Himachal award in 2017. Due to his vast experience in the field of agriculture Career Point University Hamirpur Himachal Pradesh has appointed him as Professor of Practice.



श्री हरिमन शर्मा

श्री हरिमन शर्मा एक जाने-माने प्रगतिशील किसान हैं, जिन्होंने सेब की एक ऐसी नई किस्म (एचआरएमएन-99) विकसित की है, जिसे मैदानी, उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है, जहाँ गर्मियों में तापमान 40 से 50 डिग्री सेल्सियस तक हो सकता है। इस किस्म को फूल आने और फल लगने के लिए ठंडे वातावरण में रखने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

2. 4 अप्रैल, 1956 को हिमाचल प्रदेश के बिलासपुर जिले के एक छोटे से गाँव पनियाला में जन्मे, श्री शर्मा ने दसवीं कक्षा तक पढ़ाई की और परिवार की खराब आर्थिक स्थिति के कारण स्कूल छोड़ दिया। उन्होंने पैसा कमाने के लिए खेती करना शुरू किया। लेकिन पारंपरिक खेती से उन्हें पर्याप्त लाभ नहीं मिल सका। इसलिए उन्होंने बागवानी करना शुरू कर दिया। शुरुआत में वे इस क्षेत्र के पारंपरिक फलों के पौधे जैसे आम, लीची, अमरुद आदि उगा रहे थे। लेकिन इस क्षेत्र में सर्दियों के मौसम में भारी बर्फबारी हुई, जिससे आम के पौधे खराब हो गए और अधिक फल नहीं दे पाए। तब उन्होंने पारंपरिक फसलों के विकल्प पर काम करना शुरू कर दिया। वह विकल्प एचआरएमएन-99 (उनके द्वारा विकसित सेब की एक किस्म) के रूप में सामने आया।

3. श्री शर्मा हमेशा अपने घर के पीछे या आस-पास सेब के बीजों को यों ही फेंक देते थे। कुछ वर्षों के बाद उन्होंने पाया कि बीज तो अंकुरित होने लगे थे। वर्ष 2001 में उनमें से एक पेड़ पर कुछ फल लगे। एक किसान के रूप में उन्होंने यह महसूस किया कि समुद्र तल से 1800 फीट ऊपर स्थित उनके गाँव जैसे गर्म क्षेत्र में उगा सेब का यह पेड़ असाधारण था। उन्होंने इस पौधे को संरक्षित किया और अगले वर्ष उन्होंने उसकी कुछ शाखाएँ लीं और एक प्लम के पेड़ पर उन्हें ग्राफ्ट किया क्योंकि सेब का कोई पेड़ उपलब्ध नहीं था। ग्राफ्टिंग सफल रही और तीन वर्ष बाद उन्हें अच्छी गुणवत्ता वाले फल मिलने लगे। वर्ष 2004 से 2005 के दौरान वे शिमला से क्रैब एप्पल के पौधे लाए और उन्हें ग्राफ्ट किया। उन्होंने सेब के पेड़ों का छोटा सा बाग बनाया जो आज भी फल दे रहा है। राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान ने उन्हें इस कार्य में सहायता दी है और तीन साल के पौधों में उनके पनपने और फलने का अध्ययन करने के उद्देश्य से देश के विभिन्न क्षेत्रों में परिचयपरक और मूल्यांकन परीक्षण के लिए वर्ष 2014 से 2015 तक एचआरएमएन 99 पौधों की रोपाई शुरू की है। दिलचस्प बात यह है कि भारत के लगभग प्रत्येक राज्य में दो या तीन साल के पौधों में फल लगने की सूचना प्राप्त हुई है। अब यह किस्म नेपाल, बांग्लादेश, जर्मनी, ओमान आदि जैसे दुनिया के विभिन्न हिस्सों में भी फल दे रही है। इस किस्म को पीपीवीएफआरए अधिनियम 2001 के तहत संरक्षित भी किया गया है और इसे कृषक-किस्म के रूप में विनिर्दिष्ट किया गया है।

4. श्री शर्मा को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं जैसे कि वर्ष 2017 में राष्ट्रीय नवप्रवर्तन प्रतिष्ठान (भारत के विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन) द्वारा 9वां द्विवार्षिक ग्रीन ग्रास रूट इनोवेटर पुरस्कार, वर्ष 2020 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा दिया गया जगजीवन राम कृषि अभिनव पुरस्कार, वर्ष 2016 में कृषि विभाग, भारत सरकार द्वारा दिया गया राष्ट्रीय नवप्रवर्तक पुरस्कार, वर्ष 2018 में वाराणसी, उत्तर प्रदेश में आईसीएआर द्वारा सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार, वर्ष 2017 में आईएआरआई फेलो पुरस्कार। राजस्थान पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, बीकानेर ने उन्हें वर्ष 2017 में खेतों के वैज्ञानिक उपाधि से सम्मानित किया। बिहार कृषि विश्वविद्यालय ने उन्हें वर्ष 2018 में सर्वश्रेष्ठ ग्रीन ग्रास इनोवेटर पुरस्कार से सम्मानित किया। शेर ए कश्मीर विज्ञान और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू ने उन्हें वर्ष 2021 में नवप्रवर्तक किसान पुरस्कार से सम्मानित किया। जी मीडिया ने उन्हें वर्ष 2017 में प्राइड ऑफ पंजाब, हरियाणा और हिमाचल पुरस्कार से सम्मानित किया। कृषि के क्षेत्र में उनके व्यापक अनुभव के कारण, करियर पॉइंट यूनिवर्सिटी, हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश ने उन्हें प्रोफेसर ऑफ प्रैक्टिस नियुक्त किया है।